आगरा घराने में निर्वाहित मध्य लय प्रधान गायन शैलियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

दयालबाग शिक्षण संस्थान (डीम्ड विश्वविद्यालय)
दयालबाग, आगरा की संगीत विषय में
पी0एच0डी0 उपाधि हेतु
प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की प्रस्तावित रूपरेखा

शोधार्थिनी

प्रियंका सिंह

शोध निर्देशिका

प्रो0 सुधा सहगल

संगीत विभाग, कला संकाय
दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय)
दयालबाग आगरा- 282205

2022

भूमिका -

आगरा घराना व हिन्दुस्तानी संगीत एक दूसरे के पर्याय हैं। इस घराने की शास्त्रीय संगीत प्रधान कीर्ति पताकाओं ने अपनी विशिष्टताओं का सदैव परचम लहराया है। इस घराने के कलाकारों ने विभिन्न गायन शैलियों के माध्यम से अपनी रचनात्मकता, कलात्मक, संयोजन राग का बंदिश के माध्यम से लालित्यपूर्ण संयोजन, सृजनशील लयकारियों को समक्ष लाकर इस घराने को अन्य घरानों से विशिष्ट पहचान दिलवाई है। इस घराने के विलम्बित ख्याल जहाँ एक ओर गाम्भीर्यपूर्ण, सौन्दर्यात्मक, विशिष्ट तत्वों से परिपूर्ण तथा मींड एवं बहलावे के काम से सुसज्जित हैं, वहीं दूसरी ओर द्रुत ख्याल चमत्कारपूर्ण एवं स्वर बोल के ताने-बाने में निबद्ध अपने पृथक ही अनूठेपन का परिचय देते हैं। आगरा घराने की ख्याल गायन शैली का लोहा तो सम्पूर्ण शास्त्रीय जगत मानता ही है। इस घराने की गायकी में लयकारी, बोलबाँट, आवाज का खुलापन, स्वर एवं बोलों का स्पष्ट उच्चारण, गाम्भीर्यपूर्ण गायन तथा साथ ही कलात्मक सोच भी सुविख्यात है। इस घराने के कलाकारों का योगदान किसी परिचय पर अवलम्बित नहीं है।

उपरोक्त विशेषताओं से पृथक भी आगरा घराने के कलाकारों ने जहाँ एक ओर विलम्बित एवं द्रुत लय प्रधान गायन शैलियों में अपना लोहा मनवाया है वहीं दूसरी ओर मध्य लय प्रधान गायन शैलियों में भी अपना उतना ही महत्वपूर्ण योगदान दिया है। गायकी की मूलभूत एवं मौलिक विषेशताऐं जो आगरा घराने में सुस्पष्ट होती हैं, उनको किंचित परिवर्तन के साथ इस घराने के कलाकारों ने कुछ ऐसी गायन शैलियों में रचनात्मक कार्य तो किये जो मध्य लय से सम्बद्ध हुए, किन्तु अत्यंत लोकप्रिय व प्रचार में नहीं आ सके, जैसे- सादरा गायन शैली, बोल-बाँट ठुमरी, मध्य लय प्रधान ख्याल एवं मध्य लय दादरा गायन शैली। यह सभी गायन शैलियाँ मूलभूत रूप से मध्य लय प्रधान ही हैं। इन सभी गायन शैलियों में आगरा घराने की विशिष्टताऐं, गायकी की समृद्ध परंपरा एवं रचनाधर्मिता का मन्जुल स्वरूप प्रचुर मात्रा में दृष्टव्य होता है किन्तु ये गायन शैलियाँ प्रचारित एवं प्रसारित न होने के कारण प्रकाश में नहीं आ सकीं।

शोधकर्त्री संगीत की छात्रा है, एवं गायन एवं गायन शैलियों में अत्यंत रूचि होने के कारण विभिन्न गायन शैलियों को सीखने की हृदय में जिज्ञासा एवं उत्कंठा भी है, दूसरी ओर आगरा घराने की ऐसी गायन शैलियाँ जो प्रकाश में नहीं आयी हैं उनको खोजने, जानने, सीखने एवं अध्ययन करने की तीव्र इच्छा के कारण शोधकर्त्री आगरा घराने में निर्वाहित मध्य लय प्रधान गायन शैलियों के विश्लेषणात्मक अध्ययन हेतु शोधकार्य करने को उत्साहित एवं तत्पर है तथा शोध हेतु इस विषय से सम्बन्धित सामग्री को भी सर्वेक्षण के माध्यम से शोधकर्त्री द्वारा खोजा गया जिसका विस्तृत विवरण इस प्रकार है -

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण -

पुस्तकेः

- भारतीय संगीत की परंपरा वंशानुक्रम एवं वातावरण, गोस्वामी, डॉ0 हरीकिशन, कनिष्क पब्लिकेशन, नई दिल्ली - 110002
- उत्तर भारतीय संगीत की प्रमुख शैलियों एवं बंदिशों का आधार स्वरूप; ज्योतिषी, आनंद कृष्ण, एसोसिएटिड पब्लिसिंग हाऊस, ब्लॉक-77, संजय प्लेस, आगरा।
- स्वर वाद्यों के वादन में ठुमरी और धुन (प्रचलन एवं महत्व); वालिया, डॉ0 सीमा रानी, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली - 110002 ISBN - 81-7453-268-4
- आगरा घराना परम्परा, गायकी और चीजें; मेहता रमणलाल, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन्स, सेल्स यूनिट, बड़ौदा, द्वितीय आवृत्ती, मार्च 1993
- Indian Classical msic and gharana tradition; Mehta, R.C, Roadworthy Publication (P) Ltd. ISBN : 8189973096

शोध प्रबन्धः

- ख्याल गायकी के घराने और जयपुर घराना; बाकरे, सुष्मा चन्द्रकांत; महाराजा सयाजिराव यूनिवर्सिटी- 1990

- भारतीय संगीत में आगरा घराने का योगदान का ऐतिहासिक अध्ययन; बोस, बर्नाली; दयालबाग ऐजुकेशनल इन्स्टीट्यूट- 1997
- ख्याल और ठुमरी गायन में तबला संगत की भूमिका; गर्ग, रीनू, पंजाब यूनिवर्सिटी- 1997
- उत्तर भारतीय संगीत के ख्याल गायन की समृद्धि में कुछ एक प्रमुख आधुनिक वाग्येकारों का सांगितिक योगदान; ग्रोवर नीरा, SNDT Womens University -1998
- ख्याल गायन परंपरा और नवविचार; वैंग्कान्कर, एस ए शिवाजी यूनिवर्सिटी- 1999
- ठुमरी गायन शैली के विकास में महिला कलाकारों का योगदान; द्विवेदी, पूर्णिमा, छत्रपति साहूजी महाराज- 2003
- ख्याल गायन शैली में आलाप तान का प्रयोजन एवं महत्व; किशन राज, पंजाब यूनिवर्सिटी -2004
- हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की गायन एवं वादन विधाओं में प्रचलित ताल पद्धति; छिब्बर, नीरू, पंजाव यूनिवर्सिटी- 2006
- धार्मिक, सांगितिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में धमार एवं राग गायन शैलियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन; शर्मा, लक्ष्मी, दयालबाग ऐजुकेशनल इन्स्टीट्यूट- 2007
- आधुनिक संदर्भ में ख्याल गायन शैली के स्वरूप का सैद्धान्तिक अध्ययन; गांधी, नीरज, पंजाब यूनिवर्सिटी - 2008
- आचार्य एस0 एन0 रातनजनकर का आगरा घराने में योगदान; सेवक, जय अरूनकान्त, सौराष्ट्र यूनिवर्सिटी- 2011
- आगरा घराने का भारतीय संगीत में सृजनात्मक योगदान; केलकर, राजेश, गोपालराव, महाराजा सयाजीराव यूनिवर्सिटी, बड़ौदा- 2015
- उपशास्त्रीय संगीत के अन्तर्गत आने वाली विभिन्न गायन शैलियों में प्रयुक्त रागों एवं तालों की व्यवहारिकता; शर्मा, चारू, पंजाब यूनिवर्सिटी, 2016

- हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में ख्याल गायन के क्षेत्र में इन्दौर घराने का योगदान; भूषण, चन्द्र, बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय- 2018
- ख्याल गायन शैली के परिप्रेक्ष्य में तबले की संगत के क्रियात्मक तत्वों का सैद्धान्तिक अध्ययन; कुमारी, नीतू, दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट- 2019
- उत्तर प्रदेश में ख्याल गायन की परंपरा प्रमुख घरानेदार गायकों के संदर्भ में; कुमार, भूपेन्द्र, महर्षि दयानन्द यूनिवर्सिटी- 2019
- उत्तर भारतीय संगीत में शास्त्रीय गायन की विविध गायन शैलियों का क्रमिक विकास का विश्लेषणात्मक अध्ययन; खरे, श्वेता, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी- 2020
- Spread and Practice of Agra and Kirana Gharana in West Bangal; Mukharji, Samarpita, Vishwa Bharti University.

शोध पत्र

- ख्याल गायन शैलीः विकसित आयाम; शर्मा सत्यवती, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, राजस्थान, ISBN 81-7056-009-3 1994
- भारतीय संगीत में ध्रुपद गायन शैली से ख्याल गायन शैली का विकास एक अध्ययन; सहस्त्रबुद्धे, स्मिता, नई दिल्ली, Department of Culture, Ministry of Human resource and Development, Govt. of India, Classification No-782-0954, Item No - SAH-B 2002
- आगरा घराना, भाग 1, CCRT NEW DELHI
- आगरा घराना, भाग 2, CCRT NEW DELHI

उपर्युक्त सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण करने के पश्चात् शोधकर्त्री द्वारा पाया गया कि आगरा घराने के सन्दर्भ में प्रो0 रामणलाल मेहता द्वारा लिखित पुस्तक 'आगरा घराना परंपरा; गायकी और चीजें', डॉ0 हरिकिशन गोस्वामी द्वारा लिखित 'भारतीय संगीत की परंपरा वंशानुक्रम एवं वातावरण' में आगरा घराने की

ऐतिहासिकता के दर्शन व रचनाऐं प्राप्त होती हैं परंतु मध्य लय पर आधारित विभिन्न गायन शैलियों का संकलन न के बराबर है। कुछ पुस्तकों व शोध कार्यों में जैसे- डॉ0 सीमा रानी वालिया द्वारा 'रचित स्वर वाद्यों के वादन में ठुमरी और धुन (प्रचलन एवं महत्व)' व पूर्णिमा द्विवदी जी का शोध कार्य 'ठुमरी गायन शैली के विकास में महिला कलाकारों का योगदान' में ठुमरी गायन शैली का स्वरूप व प्रचलन को विस्तारित रूप में प्रकट किया है, परंतु मध्य लय (बोल बाँट ठुमरी) का उल्लेख नहीं हैं।

इस प्रकार आगरा घराने के इतिहास, कलाकारों व गायन विधि अथवा गायकी के संदर्भ में सामग्री तो प्राप्त है किन्तु मध्य लय प्रधान गायन शैलियों से सम्बन्धित कोई सामग्री प्राप्त नहीं होती।

अतः सर्वथा नवीन व मौलिक आगरा घराने की अत्यंत समृद्ध, कलात्मक विशिष्ट रचनात्मकता से युक्त मध्य लय प्रधान गायन शैलियों का गहन अध्ययन करने की व विकासोन्मुख करने की दृष्टि से, गायन शैलियों में निहित क्रियात्मक विन्यास को सीखने की दृष्टि से, गायकी के विभिन्न तत्वों का सूक्ष्म निरिक्षण करने की दृष्टि से, सौन्दर्यात्मक तत्वों के लालित्वपूर्ण सौष्ठव को सीखने की दृष्टि से तथा मध्य लय प्रधान गायन शैलियों को प्रकाश में लाने की दृष्टि से निम्न विषय का चयन किया गया-

विषय कथनः

आगरा घराने में निर्वाहित मध्य लय प्रधान गायन शैलियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

प्रस्तावित शोध में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्याः

घराना-

(सं.पुं. एक. व.) वंष, खानदान, कुल आदि।

- वर्धा हिन्दी शब्दकोश - श्री राम प्रकाश सक्सेना

(सं. हि. पु.) वंश, कुल

-आदर्श हिन्दी शब्दकोश - पं0 रामचंद्र पाठक

- निर्वाहित-

निर्वाह+इक्

निर्वाह तथा संस्कृत के इक् प्रत्यय के योग से बना हुआ;

(सं. पु.) निभाने की प्रक्रिया, निबाह

-हिन्दी शब्दकोश , डॉ0 हरदेव बाहरी

- गायन शैलियों-

स्त्रालिंग (संगीत गायन) गायन विधा का पूरा ज्ञान, गाने की क्रिया या भाव

- लोक भारती प्रामाणिक हिन्दी शब्दकोश

- आचार्य रामचंद्र वर्मा

स्त्रीलिंग, गाने की उच्च कला, गाने का पेशा, गाने का तरीका

मानक विशाल हिन्दी शब्दकोश

- कृष्णकान्त दीक्षित (राष्ट्रपति पुरस्कार)

संज्ञा, गायन (पु.) शैली (स्त्री) गाने की क्रिया या ढंग

भाषा शब्दकोश- डॉ0 रामशंकर शुक्ल, रसाल

- विश्लेषणात्मक-

(वि. पु.) विश्लेषण+आत्मक

तत्वसंधान, परीक्षण, वर्णन।

- हिन्दी शब्दकोश , डॉ0 हारदेव बाहरी

अध्ययन के उद्देश्यः

- आगरा घराने की ऐतिहासिकता एवं उसके कलाकारों के विषय में अध्ययन करना।

- आगरा घराने की गायकी के विशिष्ट तत्व खोजकर उनके क्रियात्मक तत्वों का अध्ययन करना।

- आगरा घराने में निर्वाहित प्रचलित एवं अप्रचलित गायन शैलियों के क्रियात्मक स्वरूपों का अन्वेषण एवं अध्ययन करना।
- आगरा घराने में निर्वाहित मध्य लय प्रधान गायन शैलियों का अन्वेषण, पठन-पाठन एंव स्वरचित स्वरांकन व सूक्ष्म निरीक्षण करना।
- मध्य लय प्रधान गायन शैलियों की ध्वन्यांकित सामग्री (Recording) को खोजकर उनमें निहित क्रियात्मक सूक्ष्मताओं (Nuances) का अध्ययन व सूक्ष्म निरीक्षण करना। विभिन्न स्त्रोतों, विद्वानों, कलाकारों द्वारा साक्षात्कार के माध्यम से लिखित सामग्री एकत्रित करना एवं विश्लेषण करना।

अध्ययन की आवश्यकताः

यद्यपि आगरा घराने की गायकी गायन शैलियों व कलाकारों, विद्वानों के विषय में कुछ भी अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है तथापि किसी भी क्षेत्र में समग्रता होने के बावजूद भी कुछ न कुछ ऐसे तत्व, कारक अथवा अवयव रह ही जाते हैं, जिन्हें उजागर करने की आवश्यकता होती है। जैसा कि उल्लेख किया जा चुका है कि आगरा घराने की मध्य लय प्रधान गायन शैलियाँ इस घराने में निर्वाहित होने के बावजूद अप्रचलन का शिकार हो गईं, जैसे- सादरा, मध्य लय ख्याल, बोल-बाँट ठुमरी, मध्य लय दादरा। अतः इन गायन शैलियों को प्रकाश में लाने की आवश्यकता है। इन गायन-शैलियों में बंदिशो के माध्यम से अनेक रचनात्मक कार्य हुए किंतु अप्रकाशन के कारण प्रचारित व प्रसारित नहीं हो सके, अतः इन गायन शैलियों की विभिन्न बंदिशों को भी प्रकाश में लाने की आवश्यकता है। आगरा घराने में प्रचलित ध्रुपद-धमार एवं ख्याल गायन शैलियों में गायकी के जिन तत्वों का प्रयोग किया जाता है, उनसे पृथक मध्य लय प्रधान गायन शैलियों में वे तत्व किंचित परिवर्तित स्वरूप धारण कर लेते हैं अतः इन परिवर्तित स्वरूपों को भी उजागर करने की आवश्यकता है।

अध्ययन का महत्वः

प्रस्तावित शोध का महत्व आगरा घराने में निर्वाहित मध्य लय प्रधान गायन शैलियों को उजागर करने में है। इन गायन शैलियों में गेय ताल के अनुसार लयकारी बद्ध आलाप, बोल-बाँट, सरगम, छोटी-छोटी तानों का

प्रयोग अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिसके कारण शोध के अंर्तगत इन्हीं विशेषताओं को समक्ष लाना अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। प्रस्तावित शोध विभिन्न विद्वानों एवं कलाकारों द्वारा साक्षात्कार के माध्यम से प्रदान की गई बंदिशों एवं स्वर रचनाओं को विद्यार्थियों, शोधार्थियों एवं संगीत जगत के ज्ञान पिपासुओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

विषय का परिसीमांकनः

कार्य एवं समय की सीमा को देखते हुए प्रस्तावित शोध अध्ययन को केवल चार मध्य लय प्रधान गायन शैलियों तक ही परिसीमित कर दिया जाएगा।

कार्य विधि एवं उपकरणः

प्रस्तावित शोध हेतु सर्वेक्षणात्मक व व्याख्यात्मक प्रविधियों का प्रयोग किया जाएगा तथा विभिन्न पुस्तकालयों, संस्थाओं तथा अकादमियों से सामग्री प्राप्त की जाएगी। इस क्षेत्र के कलाकारों, विद्वानों, कथा लेखकों द्वारा साक्षात्कार के आधार पर जानकारी प्राप्त की जाएगी। रेडियो, टी0 वी0 व इंटरनेट के माध्यम से भी सूचनाऐं एकत्रित की जाएगी। शोध उपकरणों में प्रश्नावली, अनुसूची, निर्धारण मापनी का प्रयोग किया जाएगा तथा अन्य उपकरणों जैसे- सी0डी0, वीडियो कैमरा, कम्प्यूटर आदि का प्रयोग किया जाएगा।

अध्यायों का विभाजनः

प्रथम अध्याय-

- आगरा घराने की ऐतिहासिकता एवं विभिन्न गायन शैलियाँ व प्रमुख कलाकार।
- आगरा घराने की गायन शैलियों के विशेष तत्व।

द्वितीय अध्याय-

- आगरा घराने में निर्वाहित मध्य लय प्रधान गायन शैलियाँ
  - परिचय
  - विकास

- वर्तमान स्वरूप
- मध्य लय प्रधान गायन शैलियों के प्रमुख कलाकार

तृतीय अध्याय-

- मध्य लय प्रधान गायन शैलियों का सैद्धान्तिक पक्ष

चतुर्थ अध्याय-

- मध्य लय प्रधान गायन शैलियों का क्रियात्मक पक्ष

पंचम अध्याय-

- मध्यलय प्रधान गायन शैलियों का संगीतात्मक विश्लेषण

निष्कर्ष-

संदर्भ ग्रंथ सूची-

पुस्तकेंः

- भारतीय संगीत की परंपरा वंशानुक्रम एवं वातावरण; गोस्वामी, डॉ0 हरीकिशन, कनिष्क पब्लिकेशन, नई दिल्ली-110002
- उत्तर भारतीय संगीत की प्रमुख शैलियों एवं बंदिशों का आधार स्वरूपः ज्योतिषी, आनंद कृष्ण, एसोसिएटिड पब्लिसिंग हाऊस, ब्लोक-77, संजय प्लेस, आगरा।
- स्वर वाद्यों के वादन में ठुमरी और धुन (प्रचलन एवं महत्व); वालिया, डॉ0 सीमा रानी, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली - 110002 ISBN- 81 - 7453 -268 -4
- आगरा घराना परम्परा, गायकी और चीजें; मेहता रमणलाल, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन्स, सेल्स यूनिट, बड़ौदा, द्वितीय आवृत्ती, मार्च 1993
- Indian classical music and gharana tradition; Mehta, R.C, Roadworthy Publication (P) Ltd. ISBN. 8189973096

- आधुनिक व्यवसायिक हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन परंपरा, शर्मा डॉ0 जीतराम, जे. एम. डी. हाउस, अन्सारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली, वर्ष 2004
- आग्रा (आगरा) घरानाः परम्परा और बंदिशेः महाले, पं. यशवंतबुवा, संस्कार प्रकाशन।
- Thumari In Historical and Stylistic Perspectives: Manuel Peter, Motilal Banarsidass Publication, 1989

शोध प्रबन्धः

- ख्याल गायकी के घराने और जयपुर घराना; बाकरे, सुष्मा चन्द्रकांत; महाराजा सयाजिराव यूनिवर्सिटी- 1990
- भारतीय संगीत में आगरा घराने का योगदान का ऐतिहासिक अध्ययन; बोस, बर्नाली; दयालबाग ऐजुकेशनल इन्स्टीट्यूट- 1997
- ख्याल और ठुमरी गायन में तबला संगत की भूमिका; गर्ग, रीनू, पंजाब यूनिवर्सिटी- 1997
- उत्तर भारतीय संगीत के ख्याल गायन की समृद्धि में कुछ एक प्रमुख आधुनिक वाग्येकारों का सांगितिक योगदान; ग्रोवर नीरा, SNDT Womens University - 1998
- ख्याल गायन परंपरा और नवविचार; वैंग्कान्कर, एस ए शिवाजी यूनिवर्सिटी- 1999
- ठुमरी गायन शैली के विकास में महिला कलाकारों का योगदान; द्विवेदी, पूर्णिमा, छत्रपति साहूजी महाराज- 2003
- ख्याल गायन शैली में आलाप तान का प्रयोजन एवं महत्व; किशन राज, पंजाब यूनिवर्सिटी -2004
- हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की गायन एवं वादन विधाओं में प्रचलित ताल पद्धति; छिब्बर, नीरू, पंजाव यूनिवर्सिटी- 2006
- धार्मिक, सांगितिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में धमार एवं राग गायन शैलियों का विश्लेणात्मक अध्ययन; शर्मा, लक्ष्मी, दयालबाग ऐजुकेशनल इन्स्टीट्यूट- 2007

- आधुनिक संदर्भ में ख्याल गायन शैली के स्वरूप का सैद्धान्तिक अध्ययन; गांधी, नीरज, पंजाब यूनिवर्सिटी - 2008
- आचार्य एस0 एन0 रातनजनकर का आगरा घराने में योगदान; सेवक, जय अरूनकान्त, सौराष्ट्र यूनिवर्सिटी- 2011
- आगरा घराने का भारतीय संगीत में सृजनात्मक योगदान; केलकर, राजेश, गोपालराव, महाराजा सयाजीराव यूनिवर्सिटी, बड़ौदा- 2015
- उपशास्त्रीय संगीत के अन्तर्गत आने वाली विभिन्न गायन शैलियों में प्रयुक्त रागों एवं तालों की व्यवहारिकता; शर्मा, चारू, पंजाब यूनिवर्सिटी, 2016
- हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में ख्याल गायन के क्षेत्र में इन्दौर घराने का योगदान; भूषण, चन्द्र, बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय- 2018
- ख्याल गायन शैली के परिप्रेक्ष्य में तबले की संगत के क्रियात्मक तत्वों का सैद्धान्तिक अध्ययन; कुमारी, नीतु, दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट- 2019
- उत्तर प्रदेश में ख्याल गायन की परंपरा प्रमुख घरानेदार गायकों के संदर्भ में; कुमार, भूपेन्द्र, महर्षि दयानन्द यूनिवर्सिटी- 2019
- उत्तर भारतीय संगीत में शास्त्रीय गायन की विविध गायन शैलियों का क्रमिक विकास का विश्लेणात्मक अध्ययन; खरे, श्वेता, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी- 2020
- Spread and Practice of Agra and Kirana Gharana in west Bangal; Mukharji, Samarpita, Vishwa Bharti University

लघु शोध प्रबन्धः

- आगरा घराने की बोलबाँट ठुमरी- एक विश्लेषणात्मक अध्ययन; शर्मा चंचल, दयालबाग ऐजुकेशनल इन्स्टीट्यूट, आगरा, वर्ष- 2010

- आगरा घराने की सादरा गायन शैली का विश्लेषणात्मक अध्ययनः सत्संगी अर्शा, दयालबाग ऐजुकेशनल इन्स्टीट्यूट, आगरा, वर्ष- 2015

शोध पत्रः

- ख्याल गायन शैलीः विकसित आयाम; शर्मा सत्यवती, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, राजस्थान, ISBN No. 81-7056-009-3 1994
- भारतीय संगीत में ध्रुपद गायन शैली से ख्याल गायन शैली का विकास एक अध्ययन; सहस्त्रबुद्धे, स्मिता, नई दिल्ली, Department of Culture, Ministry of Human resource and Development, Govt. of India, Classification No- 782-0954, Item No - SAH-B 2002
- आगरा घराना, भाग 1, CCRT NEW DELHI
- आगरा घराना, भाग 2, CCRT NEW DELHI
- "घरानों का संगम", मिश्रा पं0 श्यामदास, संगीत कला विहार, अंक 8- अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मण्डल प्रकाशन, 2011

प्रस्तावित शोध प्रबन्ध 'आगरा घराने में निर्वाहित मध्य लय प्रधान गायन शैलियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन' की रूपरेखा निर्मित करने से पूर्व शोधकर्त्री द्वारा कतिपय प्रश्नों का निर्माण किया गया। इन प्रश्नों को विभिन्न विद्वानों, कलाकारों व विषय विशेषज्ञों से पूछा गया, जो इस प्रकार हैं-

- आगरा घराना कितना पुराना है?
- आगरा घराने में कौन-कौन सी गायन शैलियाँ प्रचलित हैं?
- ऐतिहासिक दृष्टि से कौन सी गायन शैलियों का प्रचार रहा है?
- आगरा घराने में कौन-कौन सी गायन शैलियाँ प्रचार में नहीं हैं?
- अप्रचलित हुई गायन शैलियों के पार्श्व में क्या कारण रहे?
- किन गायन शैलियों को मध्य लय प्रधान की श्रेणी में रखा गया?

- गायन शैलियों को मध्य लय में रखने के कारण क्या रहे?
- मध्य लय की बंदिश बनाने के पार्श्व में कौन से तत्वों का प्रयोग किया जाता है?
- मध्य लय की बंदिशों का प्रयोग किस-किस प्रकार से किया जाता है?
- आगरा घराने की मध्य लय प्रधान बंदिशों में क्या विशेषताऐं निहित है, जो इस घराने को अनूठापन प्रदान करती हैं?
- मध्य लय प्रधान गायन शैली को प्रचलित बनाने में आगरा घराने के कलाकारों का क्या योगदान है?
- किस शैली का प्रयोग कलाकारों द्वारा अधिकतर किया जाता है?
- बोल-बाँट ठुमरी क्या है?
- बोल-बाँट ठुमरी का आगरा घराने में क्या स्थान है?
- बोलों को किस प्रकार ठुमरी में बाँटा जाता है?
- बोल-बाँट ठुमरी का गायन किस प्रकार किया जाना चाहिए?
- आगरा घराने में निर्वाहित बोल-बाँट ठुमरी की विशेषताऐं क्या हैं?
- सादरा गायन शैली का इतिहास क्या है?
- सादरा गायन शैली का प्रयोग आगरा घराने के संदर्भ में किस प्रकार किया जाता है?
- गायन के अतिरिक्त क्या सादरा वाद्यों पर भी निर्वाहित की जाती है?
- मध्य लय दादरा गायन शैली क्या है?
- मध्य लय दादरा गायन शैली का प्रयोग आगरा घराने के संदर्भ में किस प्रकार किया जाता है?
- मध्य लय दादरा गायन शैली एवं द्रुत लय दादरा में क्या अंतर है?